

भारत बना दुनिया का सबसे बड़ा चीनी उत्पादक

प्रलिस के लयः

गन्ना, पेट्रोल के साथ इथेनॉल सममशरण (EBP) कार्यक्रम, उचतऱ और लाभकारी मूल्य (FRP), कृषऱ लागत एवं मूल्य आयोग (CACP), रंगराजन समतऱऱ (2012), जैव ईधन नीतऱ 2018.

मेन्स के लयः

भारत की अरथव्यवस्था पर चीनी उत्पादन का प्रभाव

चरचा में क्यों?

हाल ही में भारत 5000 लाख मीटरकऱ टन (LMT) से अधकऱ गन्ने के रकऱरड उत्पादन के कारण **चीनी** के कृषेतर में सबसे बडे उत्पादक एवं उपभोक्ता और दुनिया के दूसरे सबसे बडे नरऱयातक के रूप में उभरा है ।

चीनी के अचछे उत्पादन के कारणः

- **चीनी का शानदार सीजन (सतऱबर-अक्टूबर)**: सीजन के दौरान गन्ना उत्पादन, चीनी उत्पादन, चीनी नरऱयात, गन्ना खरीद, गन्ना बकाया भुगतान और इथेनॉल उत्पादन के सभी रकऱरड बनाए गए ।
- **उचच नरऱयात**: नरऱयात बना कऱसी वतऱतीय सहायता के लगभग 109.8 LMT के साथ सबसे अधकऱ था और इसने लगभग 40,000 करोड रुपए की वदऱशी मुद्रा अरजतऱ की ।
- **भारत सरकार की नीतगऱत पहल**: वगऱत 5 वर्षों में सरकार द्वारा समय पर की गई पहल के चलते गन्ना उत्पादन वर्ष 2018-19 के वतऱतीय संकट से बाहर नकऱलकर वर्ष 2021-22 में आतमनरऱभरता के स्तर पर पहुँचा दऱया है ।
- **इथेनॉल उत्पादन को प्रोत्साहन**: सरकार ने चीनी मलऱों को चीनी को **इथेनॉल** में बदलने और अधशेष चीनी का नरऱयात करने के लयऱ प्रोत्साहतऱ कऱया है ताकऱ मलऱों के परचालन जारी रखने के लयऱ उनकी बेहतर वतऱतीय स्थतऱतऱ हो ।
 - इसके अलावा तेज़ी से भुगतान, कम कार्यशील पूंजी आवश्यकताओं और मलऱों में अतरऱकऱत चीनी की कमी के कारण कम नकदी ब्लॉकज के कारण चीनी मलऱों की वतऱतीय स्थतऱतऱ में सुधार हुआ है ।
- **जैव ईधन पर राषट्रीय नीतऱ 2018**, वर्ष 2025 तक EBP कार्यक्रम के तहत 20% इथेनॉल मशरण का एक सांकेतकऱ लकष्य प्रदान करतऱ है ।
- **उचतऱ और लाभकारी मूल्य (Fair and remunerative price-FRP)**: FRP वह न्यूनतम मूल्य है जो चीनी मलऱों को गन्ना कऱसानों को गन्ने की खरीद के लयऱ चुकानी पडतऱी है । यह **कृषऱ लागत और मूल्य आयोग (Commission for Agricultural Costs and Prices-CACP)** की सफऱारशऱों के आधार पर तथा राज्य सरकारों एवं अन्य हतऱधारकों के परामर्श के बाद नरऱधारतऱ कऱया जाता है ।
- **राज्य की सलाह का महत्त्व**: हालाँकऱ केंद्र सरकार FRP तय करतऱी है, राज्य सरकारें एक राज्य सलाहकारी मूल्य भी नरऱधारतऱ कर सकतऱी हैं जो चीनी मलऱ को कऱसानों को चुकानी पडतऱी है ।
- चीनी उदयऱ के नयऱमन पर सफऱारशऱें देने के लयऱ **रंगराजन समतऱऱ (2012)** का गठन कऱया गया था ।
- **रंगराजन समतऱऱ की सफऱारशऱें**:
 - चीनी के नरऱयात और आयात पर मात्ऱातमक नयऱत्रण को समाप्त करने के लयऱ इन्हें उचतऱ टैरफऱ द्वारा प्रतऱस्थापतऱ कऱया जाना चाहयऱ ।
 - उप-उत्पादों की बकऱरी पर कोई प्रतऱबऱध नहीं होना चाहयऱ और कीमतें बाज़ार नरऱधारतऱ होनी चाहयऱ ।
 - मलऱों को खोई से उत्पन्न वदऱयुत का उपयोग करने की अनुमतऱ देने के लयऱ राज्यों को नीतगऱत सुधार भी करने चाहयऱ ।

भारत में चीनी उदयऱ की वर्तमान स्थतऱतऱः

- **परचयः**: चीनी उदयऱ एक महत्त्वपूर्ण कृषऱ आधारतऱ उदयऱ है जो लगभग **50 मलऱयऱन गन्ना कऱसानों** और चीनी मलऱों में सीधे कार्यरत लगभग **5 लाख शरमकऱों की ग्रामीण आजीवकऱ** को प्रभावतऱ करता है ।
 - चीनी उदयऱ कपास के बाद भारत में दूसरा सबसे बडा कृषऱ आधारतऱ उदयऱ है ।
- **गन्ने की वृधऱ के लयऱ भौगऱलकऱ स्थतऱतऱयऱँ**:

- तापमान: गर्म और आर्द्र जलवायु के साथ 21-27 °C के मध्य।
- वर्षा: लगभग 75-100 सेमी।
- मृदा का प्रकार: गहरी समृद्ध दोमट मृदा।
- शीर्ष गन्ना उत्पादक राज्य: महाराष्ट्र > उत्तर प्रदेश > कर्नाटक।
- वितरण: चीनी उद्योग मोटे तौर पर उत्पादन के दो प्रमुख क्षेत्रों- उत्तर में उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा और पंजाब तथा दक्षिण में महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु एवं आंध्र प्रदेश में स्थापित हैं।
 - दक्षिण भारत में उष्णकटिबंधीय जलवायु है जो उत्तर भारत की तुलना में प्रतड़िकाई क्षेत्र में अधिक उपज देने के साथ उच्च सुक्रोज के लिये उपयुक्त है।
- चुनौतियाँ:
 - अनश्चित उत्पादन नरिगत: गन्ने को कई अन्य खाद्य और नकदी फसलों, जैसे- कपास, तलहन, चावल इत्यादि से प्रतसिपर्द्धा करनी पड़ती है। इससे मल्लों को गन्ने की आपूर्त प्रभावित होती है और चीनी का उत्पादन भी साल-दर-साल बदलता रहता है जिससे कीमतों में उतार-चढ़ाव होता है। कम कीमतों के कारण अतरिकित उत्पादन के समय में चीनी मल्लों को नुकसान उठाना पड़ता है।
 - गन्ने की कम उपज: दुनिया के कुछ प्रमुख गन्ना उत्पादक देशों की तुलना में भारत में प्रतड़िकाई क्षेत्र उपज बेहद कम है। उदाहरण के लिये जावा में 90 टन प्रतड़िकाई क्षेत्र और हवाई में 121 टन प्रतड़िकाई क्षेत्र की तुलना में भारत की उपज केवल 64.5 टन/ हेक्टेयर है।
 - लघु पैराई अवधि: चीनी उत्पादन एक मौसमी उद्योग है जिसमें एक वर्ष में सामान्य रूप से 4 से 7 महीने की छोटी पैराई अवधि होती है।
 - यह श्रमकों के वृत्तीय नुकसान और मौसमी रोजगार के साथ चीनी मल्लों के पूरण उपयोग न होने का कारण बनता है।
 - चीनी की कम रकिवरी दर: भारत में गन्ने से चीनी की औसत रकिवरी दर 10% से कम है जो अन्य प्रमुख चीनी उत्पादक देशों की तुलना में काफी कम है।
 - उत्पादन की उच्च लागत: गन्ने की उच्च लागत, अकुशल तकनीक, उत्पादन की अनौपचारिक प्रक्रिया और भारी उत्पाद शुल्क के कारण वनिरिमाण की लागत बढ़ जाती है।
 - भारत में अधिकांश चीनी मल्ल छोटे आकार की हैं जिनकी पैराई क्षमता 1,000 से 1,500 टन प्रतदिनि है जिससे यह उचित लाभ उठाने में वफिल रहती हैं।

आगे की राह

- गन्ना क्षेत्रों के मानचित्रण के लिये सुदूर संवेदन प्रौद्योगकियों को अपनाने की आवश्यकता है।
 - भारत में जल, खाद्य और ऊर्जा क्षेत्रों में गन्ने के महत्त्व के बावजूद हाल के वर्षों और समय अवधि में गन्ने का कोई वशिवसनीय मैप उपलब्ध नहीं है।
- गन्ने में अनुसंधान और विकास कम उपज एवं कम चीनी पुनर्प्राप्त दर जैसे मुद्दों को हल करने में मदद कर सकता है।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा वगित वर्ष के प्रश्न

प्रश्न. जैव ईंधन पर भारत की राष्ट्रीय नीतिके अनुसार, जैव ईंधन के उत्पादन के लिये नमिनलखित में से कनिका उपयोग कच्चे माल के रूप में कथिया जा सकता है? (2020)

1. कसावा
2. क्षतगिरस्त गेहूँ के दाने
3. मूँगफली के बीज
4. चने की दाल
5. सड़े हुए आलू
6. मीठे चुकंदर

नमिनलखित कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनयि:

- (a) केवल 1, 2, 5 और 6
- (b) केवल 1, 3, 4 और 6
- (c) केवल 2, 3, 4 और 5
- (d) 1, 2, 3, 4, 5 और 6

उत्तर: (a)

व्याख्या:

- जैव ईंधन पर राष्ट्रीय नीति, 2018 क्षतगिरस्त खाद्यान्न जो मानव उपभोग के लिये अनुपयुक्त हैं जैसे- गेहूँ, टूटे चावल आदि से इथेनॉल के उत्पादन की अनुमति देती है।
- यह नीति राष्ट्रीय जैव ईंधन समन्वय समतिके अनुमोदन के आधार पर खाद्यान्न की अधशेष मात्रा को इथेनॉल में परिवर्तित करने की भी अनुमति देती है।
- यह नीति इथेनॉल उत्पादन में प्रयोग होने वाले तथा मानव उपभोग के लिये अनुपयुक्त पदार्थ जैसे- गन्ने का रस, चीनी युक्त सामग्री- चुकंदर, मीठा

चारा, स्टार्च युक्त सामग्री तथा मकई, कसावा, गेहूँ, टूटे चावल, सड़े हुए आलू के उपयोग की अनुमति देकर इथेनॉल उत्पादन हेतु कच्चे माल के दायरे का वसतिार करती है। अतः 1, 2, 5 और 6 सही हैं।

अतः विकल्प (a) सही उत्तर है।

स्रोत: पी.आई.बी.

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/india-becomes-the-world-s-largest-producer-of-sugar>

